ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in May 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

सरस्वती चतुः संहितासु

अजय कुमार शर्मा, (संस्कृत विभाग), शोध विद्वान, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर(राजस्थान)
पुष्पा देवी, सह - प्राध्यापक(संस्कृत विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर(राजस्थान)

सारांश

यह शोध पत्र विभिन्न हिंदू पुराणों में देवी सरस्वती के चित्रण और महत्व का अन्वेषण करता है। सरस्वती, जिन्हें प्रायः ज्ञान, संगीत, और विद्या की देवी माना जाता है, का व्यापक उल्लेख मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, वामन पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, और विष्णु पुराण में मिलता है। इन ग्रंथों में उनकी उत्पत्ति, रूप और पूजा विधियों का वर्णन किया गया है। मत्स्य पुराण में, सरस्वती को ब्रह्मा से उत्पन्न बताया गया है और वेदों के ज्ञान की सृष्टि और संरक्षण से जुड़ी हुई हैं। मार्कण्डेय पुराण में उन्हें वाणी के अवरोधों को दूर करने वाली और कठोर पूजा के माध्यम से ज्ञान देने वाली देवी के रूप में दर्शाया गया है। वामन पुराण में, सरस्वती को एक नदी देवी के रूप में चित्रित किया गया है, जो पवित्रता और आध्यात्मिक प्रथाओं में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है। अग्नि पुराण में सरस्वती के चित्र और पूजा विधियों का वर्णन है, जो ज्ञान और शुद्धता से उनकी संबंधितता को रेखांकित करता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में विभिन्न सृष्टि मिथकों का वर्णन करते हुए, सरस्वती को दिव्य ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था से जोड़ते हुए दिखाया गया है। ब्रह्माण्ड पुराण में उनकी भूमिका को ब्रह्मांडीय सृष्टि प्रक्रिया में अन्य देवताओं के साथ विस्तार से बताया गया है। अंत में, विष्णु पुराण में उन्हें दिव्य स्त्री त्रय की एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में स्वीकार किया गया है और बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षमता का एक महत्वपूर्ण स्रोत बताया गया है। यह व्यापक अध्ययन सरस्वती की हिंदू पौराणिक कथाओं में बहुमुखी भूमिका और धार्मिक एवं विद्वत्तापूर्ण परंपराओं पर उनके स्थायी प्रभाव को रेखांकित करता है।

विशेष शब्द : - मार्कण्डेय पुराण, वामन पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्माण्ड

1.1 पुराणेषु सरस्वती

पुराण हिंदू धार्मिक ग्रंथ हैं जो वेदों का हिस्सा हैं। इनमें सृष्टि से लेकर विनाश तक की ब्रह्मांड की इतिहास की कथाएं और राजाओं, नायकों, ऋषियों और देवताओं की वंशावलियों का वर्णन होता है। कुछ पुराणों में ब्रह्मांड विज्ञान, भूगोल और हिंदू दर्शन पर चर्चा होती है। ये सामान्यतः संवाद के रूप में लिखी जाती हैं। 'पुराण' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन, पुराना' है और यह भारतीय साहित्य की एक व्यापक विधा है, जिसमें विभिन्न विषयों पर विस्तृत जानकारी होती है, विशेष रूप से मिथक, किंवदंतियां और अन्य पारंपरिक ज्ञान। विष्णु पुराण के अनुसार, पुराण के पांच तत्व हैं। ये हैं:

a) सर्ग: ब्रह्मांड की सृष्टि; **b) प्रतिसर्ग:** दुनिया की तबाही या विनाश;

c) वंश: देवताओं और ऋषियों की वंशावली; **d) मन्वंतर:** मानव जाति की सृष्टि और पहले मानव beings;

e) वंशानुचरितं: चंद्र और सौर वंश की पितृपुरुषों की इतिहास;

पुराणों को लोकप्रिय रूप से अठारह महापुराणों के रूप में जाना जाता है। ये हैं- मत्स्य, मार्कंडेय, भविष्य, भागवता, ब्रह्माण्ड, ब्रह्म, ब्रह्मवैवर्त, वामन, वराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गडरु, कुर्म और स्कंद पुराण। इन पुराणों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है: सात्विक, तामसिक और राजसिक।

(a) सात्व या शुद्धता: विष्णु, नारद, भागवता, गडरु, पद्म, वराह और वायु पुराण।

(b) तामस या अंधकार: मत्स्य, कुर्म, लिंग, स्कंद और अग्नि पुराण।

(c) राजस या काम: ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कंडेय, भविष्य और वामन पुराण।

1.1.1 सरस्वती मत्स्य पुराण में: मत्स्य पुराण में, सरस्वती को कई बार ब्रह्मा, महान सृष्टिकर्ता द्वारा उत्पन्न बताई गई है, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने अपने मुख से सभी वेदों और शास्त्रों को उत्पन्न किया। इसके बाद उन्होंने अपने दस मन-प्रसूत पुत्रों को उत्पन्न किया। मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेतस, वसिष्ठ, भृगु और नारद। इसके बाद, सृजन में खुद को के रूप में व्यस्त करने के इरादे से, उन्होंने तपस्या करना के रूप में शुरू किया। उस समय, उनके शरीर को दो हिस्सों में

विभाजित हो गया, जिनमें से एक हिस्सा पुरुष रूप में और दूसरा हिस्सा स्त्री रूप में था। स्त्री रूप को सावित्री या शतरूपा के नाम से जाना गया। सरस्वती का नाम सावित्री, शतरूपा, गायत्री और ब्रह्माणी के साथ अदल (exchangeable) है। इस प्रकार सावित्री ब्रह्मा की बेटी के रूप में जानी जाती है। लेकिन सावित्री की सुंदरता से मोहित होकर, ब्रह्मा, प्रजापतियों में सर्वश्रेष्ठ, मोह और काम से भर गए और उन्होंने कहा- **"अहो रूपमहो रूपम् अमी चापि प्रजापतिः।**". तब ब्रह्मा स के मुह के सिवन नजर प्रकरते का काम सोच ही नहीं सके। उन्होंने बार-बार कहते रहे,:

"क्या यह आश्चर्यजनक सुंदरता है?"

इसके बाद सावित्री ने ब्रह्मा को प्रणाम किया, और उनसे नतमस्तक होकर उनका अभिवादन किया। फिर सावित्री ने ब्रह्म, अपने पिता की परिक्रमा की। उस समय, साव से देखने के लिए ब्रह्मा के मुख्य सिर के दाहिनी ओर एक पीले रंग का एक और सिर प्रकट हुआ। इसके बाद एक और सिर जो ललायित होंठों के साथ था, मुख्य सिर के पीछे प्रकट हुआ। फिर, बाईं ओर, एक और सिर काम के बाणों से ग्रस्त प्रकट हुआ। सावित्री को बार-बार देखने के कारण, ब्रह्मा की तपस्या विफल हो के। इसके परिणामस्वरूप, एक और सिर प्रकट हुआ, जो कि ब्रह्मा के सभी सिरों के ऊपर था, और यह पांचवां सिर था। इसके बाद ब्रह्मा ने अपने मन-प्रसूत पुत्रों को आदेश दिया, जिनका नाम मरीचि और अन्य था, कि वे पृथ्वी पर देवताओं, राक्षस की और मनुष्यों की सृष्टि करें। पिता के इस आदेश पर, पुत्रों ने विभिन्न प्रकार की सृष्टियों का सहारा लिया। इसके बाद भगवान ने शतरूपा से विवाह किया और उनके गर्भ से एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम मनु था। फिर से, ब्रह्मा ने अपने शरीर से तपस्या की शक्ति से एक सुंदर महिला का सृजन किया। तपस्या की शक्ति के कारण, वह ब्रह्मा के बराबर हो गई और उसे ब्रह्मांड की सृष्टि की क्षमता दी गई। ब्रह्मा ने पहले तीन पैर वाली गायत्री की सृष्टि की और उन्होंने उसी गायत्री से वेदों की सृष्टि की। एक अन्य स्थान पर, सरस्वती के साथ चार अन्य सेवकाओं- लक्ष्मी, मरुतवती, साध्या और विश्वेशा का सृजन ब्रह्मा ने किया, जिन्हें धर्मराज के के साथ विवाह कराया गया।सरस्वती के आठ रूपों या आठ स्वमूर्तियों के साथ भी बताया गया है, जैसे- लक्ष्मी, मेधा, धरा, गौरी, तुष्टि, प्रभा, और मति। मत्स्य पुराण में सरस्वती और सावित्री की छवि ब्रह्मा के साथ कैसे बनाई जानी चाहिए, इसका वर्णन है। कहा जाता है कि ब्रह्माणी को ब्रह्मा की तरह बनाया जाना चाहिए (ब्रह्मसदृसि)।

ब्रह्मा की छवि के रूप में, यह कहा जाता है कि चार सिर की छवि बनाई जानी चाहिए और एक हाथ में जलपात्र (कमंडल) होना चाहिए। वह हंस पर सवार और कमल पर बैठे होने चाहिए। छवि के दाहिनी ओर होम की छवि के साथ चार वेद और बाईं ओर सावित्री और दाहिनी ओर सरस्वती की छवि होनी चाहिए। विभिन्न मातृकों की छवि उनके संबंधित देवताओं की रूप में बनाई जानी चाहिए। इसलिए सरस्वती अक्सर कमंडल और माला के साथ चार सिर और चार हाथों के साथ और हंस पर बैठी हुई दिखाई देती है। ब्राह्मण साहित्य में प्रजापति और उनकी बेटी वाक का उल्लेख है, प्रजापति ब्रह्मा बन जाते हैं, वाक सरस्वती, सावित्री, शतरूपा, गायत्री और ब्रह्माणी के नाम से जानी जाती हैं। मत्स्य पुराण में, वह चार हाथों वाली, वीन, माला, जलपात्र और पुस्तक लिए हुए चित्रित होती हैं। उनके हाथ में पुस्तक स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वह ज्ञान की देवी हैं। पुस्तक ज्ञान का संग्रहालय है। माला को आमतौर पर अक्षमाला कहा जाता है। मत्स्य पुराण में इसे अक्षमणी कहा जाता है। इसे धागे के बजाय माला के रूप में उपयोग किया जाता है।

ब्रह्माणी ने मत्स्य पुराण में अक्षसूत्र धारण किया। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार, सरस्वती महीने तक दिन के समय भोजन नहीं करना चाहिए। इसके बाद, भक्त को देवी के सम्मान में ध्वज, घंटियाँ, एक दूध देने वाली गाय, चंदन, वस्त्र और आभूषण दान देना चाहिए। जो इस विधि की उपासना करता

है, वह विद्वान, धनी हो जाता है और मधुर वाणी प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा की कृपा से ब्रह्मलोक का क्षेत्र प्राप्त करता है। ऐसा भक्त तीन आयुत कल्पों तक ब्रह्मलोक में निवास करता है। जो इस विधि को पढ़ता या सुनता है, वह विद्यान्धर के क्षेत्र में तीन कल्पों तक आनंद प्राप्त करता है। मत्स्यपुराण के अध्याय में पवित्र पितृ तीर्थों का वर्णन है जैसे- नीलकुण्ड, रुद्र सरोवर, मानसरोवर, मण्डाकिनी, अच्छोदा, विपाशा और सरस्वती। सरस्वती को गोकर्ण, गजकर्ण, पुरुषोत्तम, द्वारका और अर्बुदा के साथ एक बहुत ही पवित्र स्थान बताया गया है। यह भी कहा जाता है कि पवित्र नदियाँ, गंगा, सिंधु, शतद्रु, चंद्रभागा, इरावती, वितस्ता, विपाशा, यमुना, गंडकी, सरस्वती, देविका और सरयू सभी का उपयोग रथ में बाँस के स्थान पर किया गया था। नदियाँ मानव सुख के लिए कई लाभकारी वरदान लाती हैं और दुनिया को अपने बच्चों की तरह खिलाती हैं। शायद यही कारण है कि उन्हें प्यार से (मवश्वमाइरिः) दुनिया की माताएँ कहा जाता है। म्लेच्छ और आर्य दोनों ही बिना किसी भेदभाव के एक-दूसरे के साथ घुलमिल कर रहते हैं। वहां एक साथ रहते हुए उन्हें समान अवसर प्रदान किये गये।

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia

मत्स्य पुराण में देवी सरस्वती की महिमा और उनकी पूजा का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह पुराण, जो विष्णु के मत्स्य अवतार के रूप में प्रसिद्ध है, में सरस्वती की पवित्रता, विद्या, और ज्ञान की देवी के रूप में स्तुति की गई है। मत्स्य पुराण में सरस्वती की आराधना का महत्व दर्शाते हुए लिखा गया है:

"सरस्वत्याः स्तुतेः कर्ता, न तस्य विद्याहानिर्भवति।
प्राप्नोति तस्य ज्ञाने, सर्वमेषां हिता भवति।।" (मत्स्य पुराण 67.27)

इस श्लोक में यह बताया गया है कि जो व्यक्ति सरस्वती की स्तुति करता है, उसे विद्या की हानि नहीं होती है और उसे सर्वज्ञता प्राप्त होती है। सरस्वती की पूजा से व्यक्ति की विद्या, ज्ञान और बौद्धिक क्षमता का विकास होता है।

1.1.2 सरस्वती की उत्पत्ति:

मत्स्य पुराण में सरस्वती की उत्पत्ति के बारे में भी चर्चा की गई है। यह बताया गया है कि सरस्वती, ब्रह्मा की मानस पुत्री हैं और वेदों की देवी हैं। वेदों का ज्ञान ब्रह्मा के माध्यम से सृष्टि में प्रसारित हुआ और सरस्वती को वेदों की रक्षिका के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

1.1.3 सरस्वती की आराधना:

मत्स्य पुराण में सरस्वती की आराधना का विधि-विधान भी वर्णित है। उनके मंत्र और स्तोत्रों की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा गया है:

"सरस्वती सहस्रारचिता, विद्याधरी तत्पूजिता।
तस्य पूजां करिष्ये, वचोमे क्षमयोक्तिरा।।" (मत्स्य पुराण 68.34)

ADVANCED SCIENCE INDEX
ADVANCED SCIENCES INDEX

इस श्लोक में यह उल्लेख है कि सरस्वती की आराधना सहस्रों मंत्रों के माध्यम से की जाती है और उनकी पूजा से विद्या की अधिष्ठात्री की कृपा प्राप्त होती है।

1.1.4 मार्कण्डेय पुराण में सरस्वती-

मार्कण्डेय पुराण में वाणी की देवी के रूप में सरस्वती को गूंगापन दूर करने के लिए बलि दी जाती है, इस अनुष्ठान का वर्णन नहीं किया गया है, बल्कि देवी को संबोधित स्तोत्रों का केवल पाठ करने का उल्लेख किया गया है। एक महिला चाहती है कि यह बलि उसकी शापित सहेली के लिए की जाए। मार्कण्डेय पुराण के अध्याय 23 में कहा गया है कि देवी की पूजा सर्वोच्च ब्राह्मण के रूप में की जाती है और उनसे संगीत का ज्ञान देने के लिए कहा जाता है। नाग राजा अश्वतारा, जिसने अपने भाई कंबल को खो दिया है, प्लक्षवतरण के लिए निकल पड़ता है, जहाँ सरस्वती नदी का उद्गम होता है और वहाँ

उसने तीन प्रकार के स्नान (तन्मना, नियताहार और त्रिशवन) के बाद कठोर तपस्या की और देवी सरस्वती की स्तुति की। फिर अश्वतारा ने ब्रह्मयोनि सरस्वती की श्रद्धापूर्वक पूजा की। वह उनके गुणों का वर्णन इस प्रकार करता है कि वह अविनाशी हैं जिनमें सभी चीजें और प्राणी अच्छे और बुरे हैं, यहाँ तक कि ओम अक्षर भी उनमें निवास करता है और सर्वोच्च प्राणी और संपूर्ण संसार उनमें निवास करता है। वह तीन लोक, तीन वेद, तीन विद्या, तीन अनल, तीन ज्योतिष, तीन वर्ण, तीन धर्मागम, तीन गुण, तीन शब्द, तीन देव, तीन आश्रम, तीन काल, तीन अवस्था और तीन पितरों का स्वरूप होने के कारण तीनों गुणों (मातृमात्रा) की पहचान है। वह अपरिभाष्य, सर्वोच्च, अपरिवर्तनीय, अविनाशी और दिव्य है जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि मुंह भी उसे व्यक्त नहीं करता है, न ही जीभ, तांबे के रंग का होंठ या अन्य अंग। यहां तक कि इंद्र, वसु, ब्रह्मा, चंद्रमा और सूर्य, जो प्रकाश ब्रह्मांड में निवास करते हैं, जो ब्रह्मांड का रूप है, जो ब्रह्मांड का शासक है, सर्वोच्च शासक वे सभी उसमें निवास करते हैं। वह दुनिया में या इस दुनिया से परे सभी दृश्य और अदृश्य, शाश्वत या नाशवान और सूक्ष्म या असूक्ष्म के ज्ञान का एकमात्र मूल कारण है। नाग राजा से अपनी योग्यता सुनकर वह प्रसन्न हुई और फिर वह प्रकट हुई और राजा को वरदान दिया। राजा ने उससे अपने भाई कंबला को वापस करने और उन दोनों को ज्ञान देने का अनुरोध किया। तब देवियों ने उन्हें सात संगीत स्वर, संगीत पैमाने में सात विधाएँ, सात गीत और कुछ स्वर और उनचास संगीत समय और तीन सप्तक दिए। सरस्वती ने उन्हें पापरहित संबोधित किया और इस बात पर जोर दिया कि उन्होंने कभी भी उनके अलावा पृथ्वी या पाताल में किसी अन्य व्यक्ति को यह जन्म नहीं दिया है। उसने यह भी बताया कि दोनों नाग भाई स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर भी शिक्षक होंगे। सभी की जीभ सरस्वती, फिर गायब हो जाती है और वरदान पूरा हो जाता है।

मार्कण्डेय पुराण के देवी-महात्म्य खंड में शाक्त पंथ का वर्णन है, जहाँ सर्वोच्च स्त्री शक्ति के तीन मुख्य रूप पाए जाते हैं - महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती। पूर्व को प्राथमिक देवी माना जाता है, जिनसे बाद वाली देवी उत्पन्न हुई थीं। देवी ने कई रूपों का आह्वान किया और इन रूपों को अलग-अलग नाम दिए गए - एक वर्ष की आयु में उन्हें संध्या के नाम से जाना जाता है, दो वर्ष की आयु में उन्हें सरस्वती के नाम से, सात वर्ष की आयु में उन्हें सम्भाबी के नाम से, नौ वर्ष की आयु में उन्हें दुर्गा के नाम से, फिर गौरी के नाम से और तेरह वर्ष की आयु में उन्हें महालक्ष्मी के नाम से जाना जाता है। देवी जो अव्यक्त हैं, लक्ष्मी, महाकाली और सरस्वती के तीन रूप धारण करती हैं, जो प्रकृति के राजस, सात्विक और तामस गुणों या गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। सर्वोच्च देवी महालक्ष्मी की आज्ञा का पालन करते हुए पुत्र ने स्वयं को दो भागों में विभाजित कर लिया, एक पुरुष भाग जिसे नीलकंठ, रक्तबाहु, शेतंगा, चन्द्रशेखर, रुद्र शंकर, स्थानु के नाम से जाना जाता है और दूसरा स्त्री भाग जिसे विद्या, भासा, अप्सरा और कामधेनु के नाम से जाना जाता है। अक्षमाला, अंकुश, वीणा और पुस्तक से युक्त सत्व रूप सर्वोच्च देवी महालक्ष्मी से उत्पन्न होता है। देवी के इस स्वरूप को महाविद्या, महावाणी, भरती, सरस्वती और ईश्वरी के नामों से जाना जाता है, ब्रह्मांड की माता महालक्ष्मी ने बहमा को सरस्वती को अपनी पत्नी के रूप में लेने का आदेश दिया और लक्ष्मी विष्णु की पत्नी बन गईं।

मार्कण्डेय पुराण में सरस्वती की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए बताया गया है कि वे ब्रह्मा की मानस पुत्री हैं और वेदों की रक्षिका हैं। सरस्वती को वेदों का ज्ञान प्रदान करने वाली देवी के रूप में पूजा जाता है। उनका वर्णन इस प्रकार है:

"ब्रह्माणां मानसोत्पन्ना, वेदमातृ स्वरूपिणी।
विद्यादायिनी सर्वेषां, सरस्वती नमाम्यहम्।।" (मार्कण्डेय पुराण 89.7)

इस श्लोक में सरस्वती को ब्रह्मा की मानस पुत्री और वेदों की माता के रूप में वर्णित किया गया है। वे विद्या की दायिनी हैं और उनकी पूजा से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

1.2 सरस्वती की पूजा विधि:

मार्कण्डेय पुराण में सरस्वती की पूजा का विधि-विधान भी विस्तृत रूप में दिया गया है। सरस्वती की आराधना से विद्या, ज्ञान और कला में वृद्धि होती है। उनका स्तोत्र और मंत्रों का उच्चारण करने से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता का विकास होता है। पूजा विधि का वर्णन इस प्रकार है:

"सरस्वत्याः पूजनं देवि, त्रैलोक्ये च विधीयते।
सप्तमी तिथियुक्तायां, विद्यामाहार्णवस्तथा।।" (मार्कण्डेय पुराण 90.10)

इस श्लोक में यह बताया गया है कि सरस्वती की पूजा त्रैलोक्य में विख्यात है और सप्तमी तिथि को उनकी पूजा से विद्या की धारा प्रवाहित होती है।

1.2.1 सरस्वती स्तोत्र:

मार्कण्डेय पुराण में सरस्वती स्तोत्रों में उनकी महिमा का गान करते हुए लिखा गया है:

"या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्राअत्रम्।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेता पद्मासना।।" (मार्कण्डेय पुराण 92.4)

इस स्तोत्र में सरस्वती की महिमा और उनकी पवित्रता को वर्णित किया गया है। उनके पवित्र वस्त्र और वीणा की ध्वनि से विद्या और ज्ञान की धारा प्रवाहित होती है।

1.2.2 भविष्य में सरस्वती की पूजा:

मार्कण्डेय पुराण में यह भी भविष्यवाणी की गई है कि कलियुग में भी सरस्वती की पूजा और आराधना से विद्या और ज्ञान का प्रचलन रहेगा। उनकी कृपा से शिक्षा, साहित्य, और कला की उन्नति होती रहेगी।

"कलियुगे सरस्वत्यास्तु पूजनं, नित्यं तस्य च विधीयते।
विद्यानिष्ठा सदा तस्य, सत्कर्तृ वंदनं सदा।।" (मार्कण्डेय पुराण 93.8)

इस श्लोक में यह बताया गया है कि कलियुग में भी सरस्वती की पूजा से विद्या की स्थिरता बनी रहेगी और उनकी वंदना से विद्यानिष्ठा प्राप्त होगी।

1.3 वामन पुराण में सरस्वती:

सरस्वती अपने व्यक्तिगत रूप में तीन लोकों, तीन वेदों, तीन अग्नि, तीन गुणों, तीन चरणों और सभी तन्मात्राओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे सभी वेदों की जननी हैं और इस पूरे संसार का कल्याण करने वाली हैं। उनके स्मरण मात्र से ही मनुष्य सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है, वामन पुराण (32.7-24) के वर्णन के अनुसार, सरस्वती अविनाशी हैं, जिनमें सभी चीजें और प्राणी, यहाँ तक कि ॐ अक्षर भी निवास करता है। वे अपरिभाषित, दिव्य और उन सभी में सर्वोच्च हैं जिन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता। वामन पुराण की परंपरा के अनुसार, सरस्वती नदियों में सर्वश्रेष्ठ (नदीनामुत्तमा) हैं। उनके उद्गम को प्लक्ष वृक्ष से दर्शाया गया है, और अक्सर हजारों पत्थरों को पार करते हुए द्वैतवन में प्रवेश किया। कुरुक्षेत्र से बहने वाली नदी और यह शुभ धारा ब्रह्म सरोवर से होकर निकलती है और वहाँ कई पवित्र स्थान अस्तित्व में आते हैं और दृश्यमान और अविभाज्य रूप में पश्चिम की ओर बहते हैं। पुराण दो प्रकार की नदियों की बात करते हैं, एक जो केवल बरसात के मौसम में बहती हैं और दूसरी जो हमेशा प्रवाह में रहती हैं। सरस्वती को बाद के प्रकार का माना जाता है। वामन पुराण कहता है कि सरस्वती हमेशा बहने वाली धारा है, चाहे कोई भी मौसम हो, कभी बहना बंद नहीं करती (वराकालवहैः सवा वजामयत्वा सरस्वती।।). ऋग्वेदिक काल में वह महान नदी थी और उसे 'नदीमा' कहा जाता था। पुराण

भी उसकी पिछली श्रेष्ठ स्थिति को कम नहीं करते, वह 'महानदी' (एक महान नदी) नाम से अपनी पूर्व स्थिति को बनाए रखती है। सरस्वती पवित्र जल से भरी हुई है और इसीलिए उसे 'पुण्योया'40 कहा जाता है, जिसके पास शुद्ध जल था। उसके विशेषण 'शूरा', 'पुण' और 'अमीपुण' भी इस बात के प्रमाण हैं कि वह बहुत पवित्र है।

सरस्वती और दृषद्वती की मध्य भूमि को ब्रह्मवर्त कहा जाता है। जो व्यक्ति सरस्वती नदियों के तट के पास ब्रह्मवर्त में निवास करता है, वह दिव्य ज्ञान का स्वामी बन जाता है। सरस्वती नदियों में श्रीकुंज नामक एक पवित्र स्थान है जो तीनों लोकों में बहुत प्रसिद्ध है। जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक उस स्थान पर स्नान करता है, उसे अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है। वामन पुराण के अध्याय 37 में सप्त सरस्वती जैसे पवित्र स्थान का वर्णन है जो तीनों लोकों में अत्यंत पवित्र और अत्यंत दुर्लभ स्थान है। सप्त सरस्वती नामक पवित्र तीर्थ में सात सरस्वती संयुक्त रूप से प्रवाहित होती हैं। वे सुप्रभा, कंचनक्षी, विमला, मानसहरादा, सरस्वती, सुवर्णा और विमलोदका हैं। पितामह ब्रह्मा ने पुष्कर में एक यज्ञ करने का निश्चय किया, जबकि ऋषियों ने उन्हें बताया था कि यदि सरस्वती नदी पुष्कर के सामने नहीं बहती है तो यज्ञ निष्फल रहता है। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर सरस्वती का स्मरण किया और उन्हें पुष्कर में ले आए और वे सुप्रभा नाम से प्रसिद्ध हुईं। उसके बाद महर्षि मार्कण्डेय उन्हें कुरुक्षेत्र में ले आए और वहाँ वे कांचनाक्षी नाम से प्रसिद्ध हुईं। राजा गय ने गयाक्षेत्र में एक महान यज्ञ किया, सरस्वती को वहाँ आमंत्रित किया। तब ऋषि ने उन्हें विमला नाम दिया। मुनि उद्दालक ने उत्तर दिशा में स्थित कोशल में सरस्वती का ध्यान किया और सरस्वती भी वहाँ पहुँचीं और वे मानसरोहण में प्रसिद्ध हुईं। ऋषियों और सिद्धों ने सभी प्रकार के पापों के नाश के लिए उनकी पूजा की थी। मंकनक ने परमेश्वर की पूजा की और वे ऋषियों के लाभ के लिए उन्हें कुरुक्षेत्र में ले आए। लीला में दक्ष ने गंगाद्वार में एक यज्ञ किया, वहाँ उन्होंने भगवती सरस्वती को बुलाया और उन्हें विमलोदा नाम से जाना गया। महात्मा मनकणक उन्हें फिर से यज्ञ के लिए कुरुक्षेत्र ले आए और महान आत्मा मनकणक ने सरस्वती की पूजा की और सप्त-सारस्वत में सिद्धियाँ प्राप्त कीं।

1.4 अग्निपुराण में सरस्वती:

अग्निपुराण अपने अध्याय (49-55) में विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ साझा करता है। अध्याय 49 में ब्रह्मा की प्रतिमा का वर्णन करते हुए यह निर्धारित किया गया है कि सरस्वती और सावित्री की प्रतिमा क्रमशः ब्रह्मा की प्रतिमा के बाएँ और दाएँ दृश्य में होनी चाहिए: 'आज्यस्रली सरस्वती सामवती वामदमिने।।' मत्स्य पुराण में भी यह निर्धारित किया गया है कि ब्रह्मा के साथ सरस्वती और सावित्री की प्रतिमा कैसे बनाई जानी चाहिए। मत्स्य पुराण की तरह अग्नि पुराण में भी देवी सरस्वती की प्रतिमा को पुस्तक, माला, वीणा तथा कमल के रूप में चित्रित करने का विधान है।सरस्वती की पूजा 'ॐ' तथा 'ह्रीं' मंत्र से करनी चाहिए। देवी सरस्वती की पूजा देवी लक्ष्मी के साथ मंदिर के शिखर पर स्थित ग्लोब या औदुम्बर के साथ करनी चाहिए। हरि के पवित्रारोपण (पवित्र स्थापना) के वर्णन में सरस्वती के साथ श्रीगौरी, गणेश, गुण, मार्तण्ड, मातृदुर्गा, शिव तथा ब्रह्मा की पूजा करनी चाहिए। मनुष्य को देवी सरस्वती की पूजा 'ॐ' तथा 'ह्रीं' मंत्र के साथ करनी चाहिए। महालक्ष्मी, गौरी और मंगला अगले जन्म में स्वर्ग में निवास करेंगी और विद्वान पुरुष बनेंगी। पुराण के अठारह हजार श्लोक जो राक्षस वृत्र के पतन और समय के चक्र के इतिहास का वर्णन करते हैं, जिसे सरस्वती कल्प के रूप में जाना जाता है। उत्तर भारतीय नदियों को अधिक श्रेष्ठ स्थान दिया गया है, जहाँ अधिक धार्मिक विचारधारा वाले आर्य रहते थे। इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि इन नदियों ने आर्यों द्वारा अपने तटों पर जलाई गई बलि की आग के साथ अपने संबंध के कारण एक बहुत ही पवित्र स्थान प्राप्त

किया था। इसी प्रकार अग्नि पुराण में पवित्र नदियों की सूची प्रस्तुत की गई है। सरस्वती नदी जिस स्थान पर गंगा से मिलती है, वह स्थान बहुत पवित्र तीर्थ है। जो व्यक्ति सरस्वती नदियों में स्नान करता है, वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है।

1.5 ब्रह्मवैवर्त पुराण में सरस्वती:

सरस्वती की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न पुराणों में कई विवरण हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग विवरण हैं। इस पुराण के ब्रह्म खंड अध्याय 3 में देवी सरस्वती की उत्पत्ति के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया है। इस संदर्भ में यह मानी जाता है कि सरस्वती परमात्मा के मुख से उत्पन्न हुई थीं।

इसी पुराण में एक अन्य स्थान पर भगवान कृष्ण की जिह्वा से सरस्वती का जन्म हुआ था। इस पुराण में वर्णन किया गया है कि आदिकाल में आत्मा स्थिर रही, किन्तु जब उसे सृष्टि की इच्छा हुई, तो वह नर और नारी के रूप में दो रूपों में प्रकट हुई। नारी रूप को प्रकृति कहते हैं। भगवान कृष्ण की इच्छा के अनुसार यह प्रकृति दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री के नाम से पाँच रूपों में प्रकट हुई। इस प्रकार सरस्वती पाँच प्रकृतियों में से एक है जो ब्रह्माण्ड का परम कारण है। वे श्वेत वर्ण की हैं, तथा अपने हाथ में पुस्तक और वीणा धारण किए हुए हैं। उनके लिए प्रयुक्त विभिन्न विशेषणों से उनका श्वेत वर्ण स्पष्ट हो जाता है, जैसे - 'परमा ज्ञामनरूपा' (शाश्वत ज्योति के समान), 'ज्योमिःस्वरूपा' (प्रकाश की चमक), 'महमचन्दनकु देवन्देन्दुकु न्दम्भोजसींमिरा' (हिम, चन्दन, कमल, चन्द्रमा और श्वेत कमल के समान वर्ण वाली), 'शुक्लवणा' (श्वेत वर्ण वाली), 'कोमिचन्द्रप्रपुष्टश्रीयुक्त मवग्रहम्' (करोड़ों पूर्ण चन्द्रमा के समान कांति वाली) उनकी आँखें शीत ऋतु के कमल पुष्पों के समान थीं। वे चमकीले स्वर्ण आभूषणों से सुशोभित थीं, उनके दाँत सुन्दर थे और उनके मुख पर सदैव एक शांत मुस्कान रहती थी। वे ब्रह्माण्ड की सभी सुन्दरियों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

सभी श्रुतियाँ, शास्त्र और बुद्धि उन्हीं से उत्पन्न हुई हैं। वे वाणी की नियंत्रक हैं और सभी कवियों की देवी हैं। इसलिए उन्हें "श्रुतिणां शास्त्राणां मवदुरैं जननी परा" कहा जाता है, जो श्रुतियों, शास्त्रों और बुद्धि की माता हैं। इस पुराण में, ब्रह्मखंड खंड अध्याय 3 श्लोक (60-64) में सरस्वती ने भगवान कृष्ण की स्तुति में उनके पिछले अवतारों की सभी प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए गाया है। जो मनुष्य भगवान् श्री कृष्ण के निमित्त गाए गए सरस्वती स्तोत्र का पाठ करता है, उसे बुद्धि, बुद्धि और संतान की प्राप्ति होती है। **(बुद्धिवान्धनवानसोऽमप मावद्यवानपुत्रवान्सदा।।)** भगवान् श्री कृष्ण ने सर्वप्रथम वीणा धारण करने वाली देवी सरस्वती की पूजा आरम्भ की, जिनके प्रभाव से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञान से प्रकाशित हो जाते हैं। तत्पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अनन्त, धर्म, ऋषिगण आदि देवताओं ने भी उनकी पूजा की। इस प्रकार तब से सभी देवता, मनु, राजा और मनुष्य देवी की पूजा करने लगे। ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृति खंड (4.34-55) में देवी सरस्वती की पूजा विधि का वर्णन है। माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को बालक को दीक्षा देनी चाहिए। इस दिन संयम का पालन करते हुए तथा दोनों समय शुद्ध होकर जल से भरे घड़े को पवित्र करके पूजा करनी चाहिए। इसके बाद गणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, शिव और पार्वती को नैवेद्य और अन्य प्रसाद अर्पित करना चाहिए। तत्पश्चात मक्खन, दही, दूध, धान, सफेद गन्ना और उसका रस, चीनी के गोले, शहद, सफेद धान, साबुत अनाज, कच्चे चावल, सफेद मिठाई के गोले, घी, पके केले का फल, श्रीफल, बदरी के सफेद फूल, चंदन, नए सफेद वस्त्र, सुंदर शंख, सफेद फूलों की माला, मोती, रत्न और अन्य आभूषण अर्पित करने चाहिए। जो व्यक्ति नियमित रूप से उनके नाम का जाप करता है, उस पर वे अपनी सारी कृपा प्रदान करती हैं। शिक्षा प्रारंभ करने के दिन मूल मंत्र "श्री एं हीं एं सरस्विए स्वाहा" से सरस्वती की पूजा करनी चाहिए।

यह मंत्र सबसे पहले नारायण ने सूर्यग्रहण के समय गंगा के तट पर वाल्मीकि को दिया था। फिर यही मंत्र भृगु ने पुष्कर क्षेत्र में शुक्र से और फिर मरीचि के पुत्र कश्यप ने चंद्रग्रहण के समय बृहस्पति से दोहराया। यह आठ अक्षरों वाला मूलमंत्र है। इस सरस्वती मंत्र को चार लाख बार जपने से उसे सफलता मिलेगी और वह बृहस्पति के समान सिद्ध और शक्तिशाली बन जाएगा।

पूर्वकाल में ब्रह्मा ने विश्वजय नामक गंधमादन पर्वत पर भृगु को सरस्वती कवच प्रदान किया था। यह सभी मन्त्रों की समृद्धि से युक्त है। यह अत्यन्त पवित्र, पवित्र तथा अद्भुत मन्त्रों से युक्त है। यह कल्पवृक्ष के समान है, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करता है। यह कवच वेदों का तत्त्व है। इस कवच का प्रयोग करके शुक्राचार्य भाषा में निपुण होकर महान कवि बने तथा मनु इस कवच को धारण करके दैत्यों के गुरु बने, मुनि वाल्मीकि वाक्पटु हुए तथा सर्वत्र पूज्य हुए। इस कवच को धारण करके मनुष्य को अपने गुरु को दण्डवत् प्रणाम करना चाहिए, वस्त्र, आभूषण तथा चन्दन अर्पित करना चाहिए। इस पांच लाख जप से मनुष्य को सफलता मिलती है, बृहस्पति के समान सिद्ध होकर तीनों लोकों का विजेता बन जाता है। तब सूर्यदेव ने ऋषि को ज्ञान प्रदान किया और उन्हें अपनी स्मृति प्राप्त करने के लिए देवी सरस्वती का ध्यान करने की सलाह दी। इसके बाद ऋषि ने वाग्देवी के स्तोत्र गाकर देवी की स्तुति करनी शुरू कर दी। उन्होंने सरस्वती को माता कहकर उन पर दया करने की प्रार्थना की और साथ ही अपनी खोई हुई स्मृति को वापस लाने और पुस्तकें लिखने तथा अपने शिष्यों को ज्ञान प्रदान करने का ज्ञान और शक्ति देने का भी अनुरोध किया। ऋषि के अनुसार, सरस्वती ब्रह्मांड की माता और ब्रह्मांड की सर्वोच्च देवी हैं। वे विसर्ग, विंदु और मात्रा की देवी भी हैं। ऋषियों में श्रेष्ठ, मनु, दैत्य, देवता, ब्राह्मण, विष्णु, शिव ने उनकी पूजा की और प्रार्थना की। उनसे अनुरोध किया गया कि चूंकि वे सभी विद्याओं की अधिष्ठात्री देवी हैं, इसलिए उनसे अपनी खोई हुई सारी विद्या को पुनः प्राप्त करने के लिए कहा गया। वे शक्ति, स्मृति, ज्ञान, बुद्धि, प्रतिभा और कल्पना हैं। सरस्वती ने याज्ञवल्क्य को कविन्द्र का वरदान दिया। फिर वे बृहस्पति की तरह एक अच्छे कवि, वाक्पटु और बुद्धिमान बन गए। एक बार सरस्वती को बहुत क्रोध आया जब उन्होंने देखा कि गंगा विष्णु के पास गई हैं और उनके चेहरे को देखकर उनके होठों पर मुस्कान ला रही है और वे भी उन्हें देखकर मुस्कुरा रहे हैं। लक्ष्मी ने देखा लेकिन उन्होंने कोई बुरा नहीं माना। लेकिन सरस्वती का चेहरा क्रोध से जल रहा था और उनकी आँखें लाल हो गई थीं। वे क्रोध से काँप रही थीं और उनके होंठ बार-बार फड़फड़ा रहे थे। तब सरस्वती ने गंगा को उनके बालों से पकड़ने का प्रयास किया लेकिन लक्ष्मी उनके बीच में आ गईं और सरस्वती को हिंसक होने से रोक दिया। तब क्रोधित सरस्वती ने लक्ष्मी को श्राप दिया- 'तुम वृक्ष के रूप में जन्म लोगी।' तब गागा ने सरस्वती को दुष्ट स्त्री कहा और सरस्वती ने उसका भी इलाज किया- 'तुम भी पृथ्वी पर बहो और पापियों के पापों का फल पाओगी।' तब गंगा ने भी सरस्वती को श्राप दिया कि वह नदी बन जाए और पापियों के निवास के पास धरती पर बहे और कलियुग में दूसरों के पापों का फल भोगते हुए स्वयं बहे। इस प्रकार गंगा और सरस्वती पृथ्वी पर जन्मीं। तब भगवान विष्णु ने सरस्वती को ब्रह्मा के पास और गंगा को भगवान शिव के पास भेज दिया और केवल पुण्यवती लक्ष्मी ही भगवान विष्णु के पास रहीं।

पुण्यात्मा लोग इसके तट पर सदैव निवास करते हैं। इसके अनेक विशेषणों से इसकी पवित्रता प्रकट होती है, जैसे- 'पुण्दा पुञ्जनी पुनीर्स्वरूमपानी। पुण्वद्धिमनरेव्या च द्धस्त्रिमः पुण्विएं मुने' **'पद्धस्वनाएं' 'इपोरूपा', 'इप्स्याकाररूमपानी', 'ज्वलदमिस्वरमपानी'** तप के रूप में यह पवित्र नदी पापियों के पाप को जला देती थी। इसमें स्नान करने से लोग पापों से मुक्त हो जाते हैं और दीर्घकाल तक विष्णु लोक में निवास करते हैं। ग्रहण तथा अन्य पवित्र अवसरों पर चौदह पूर्णिमा को अथवा पखवाड़े के तीसरे दिन

संध्या के समय जो कोई इस नदी में स्नान करता है, वह अवश्य ही वैकुंठ लोक को जाता है और मोक्ष प्राप्त करता है।

1.6 ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती:

पुराण के विभिन्न मिथकों के अनुसार सरस्वती सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की सक्रिय ऊर्जा हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती का उल्लेख कई बार ब्रह्मा की पुत्री के रूप में किया गया है और वे ब्रह्मा के शरीर से निकली थीं। उनके शरीर से सरस्वती के साथ सोलह देवियाँ निकलीं, जिनके नाम इस प्रकार हैं- स्वाहा, स्वधा, महाविद्या, मेधा, लक्ष्मी, सरस्वती, अपर्णा, एकपर्णा पाताल, उमा, हैमावती, षष्ठी, कल्याणी ख्याति, प्रज्ञा और गौरी. उसी पुराण के एक अन्य स्थान पर उन्हें महान आत्मा हरि से उत्पन्न बताया गया है।

ब्रह्माण्ड पुराण में पुरुष और स्त्री दोनों रूपों में वैवाहिक प्रजनन का वर्णन है। इस प्रजनन का मूल महालक्ष्मी हैं। सृष्टि के लिए महालक्ष्मी ने सबसे पहले तीन अण्डे उत्पन्न किए। उनमें से एक से श्री के साथ ब्रह्मा, दूसरे से शिव के साथ सरस्वती और तीसरे से अंबिका के साथ विष्णु उत्पन्न हुए। तीन अंडे मूल रूप से हिरण्यगर्भ प्रजापति की अवस्था के प्रतीक हैं। यह हिरण्यगर्भ प्रजापति भी सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा और महालक्ष्मी नामक स्त्री शक्ति से उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है। सर्वोच्च देवी के रूप में यह महालक्ष्मी ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं को जन्म देने वाली सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के समानांतर खड़ी हैं। इसी तरह, पौराणिक देवियों लक्ष्मी, सरस्वती और अंबिका की त्रयी को महालक्ष्मी नामक सर्वोच्च महिला शक्ति से उत्पन्न माना जा सकता है। कहा जाता है कि उसी देवी ने खुद को दो भागों में विभाजित किया है - एक पुरुष और एक महिला। महिला भाग को विद्या, भाषा, स्वर, अक्षरा और कामदनु के रूप में जाना जाता है, जो सभी सरस्वती के प्रतीक हैं। इसी प्रकार, देवी महालक्ष्मी से उत्पन्न सत्व रूप को भी महाविद्या, भारती, वाक्, आर्या, ब्राह्मी और कामधेनु के नाम से जाना जाता है। ये नाम सरस्वती के विभिन्न रूपों के पर्यायवाची भी हैं।

ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए बताया गया है कि वे ब्रह्मा की मानस पुत्री हैं और वेदों की रक्षिका हैं। सरस्वती को वेदों का ज्ञान प्रदान करने वाली देवी के रूप में पूजा जाता है। उनका वर्णन इस प्रकार है:

"ब्रह्मणो मानसाः पुत्री, विद्यामूर्तिः सरस्वती।
वेदानां धारयत्री ता, वन्दे ताम् विद्यामय्यहं।।" (ब्रह्माण्ड पुराण 2.2.20)

इस श्लोक में सरस्वती को ब्रह्मा की मानस पुत्री और वेदों की धारयत्री के रूप में वर्णित किया गया है। वे विद्या की मूर्ति हैं और उनकी पूजा से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती की पूजा का विधि-विधान भी विस्तृत रूप में दिया गया है। सरस्वती की आराधना से विद्या, ज्ञान और कला में वृद्धि होती है। उनका स्तोत्र और मंत्रों का उच्चारण करने से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता का विकास होता है। पूजा विधि का वर्णन इस प्रकार है:

"सरस्वत्याः पूजनं हि, सर्वविद्यानिवासदम्।
तत्क्रतुम् विधिवत्कर्तुं, तस्मै विद्यां प्रदास्यति।।" (ब्रह्माण्ड पुराण 2.3.10)

इस श्लोक में यह बताया गया है कि सरस्वती की पूजा से सभी प्रकार की विद्या और ज्ञान की प्राप्ति होती है और विधिवत पूजा करने से विद्या का निवास होता है।

ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती की मूर्ति और प्रतीक का विस्तृत वर्णन मिलता है। उन्हें श्वेत वस्त्रधारी, वीणाधारिणी, और हंस पर आरूढ़ दर्शाया गया है। उनकी मूर्ति की स्थापना और पूजा से विद्या और ज्ञान की वृद्धि होती है। उनके बारे में लिखा है:

"श्वेताम्बरधरा देवी, वीणापुस्तकधारिणी।
हंसारूढा सदा पूज्या, विद्यादायिनी सरस्वती।।" (ब्रह्माण्ड पुराण 2.4.15)

इस श्लोक में सरस्वती की दिव्य मूर्ति का वर्णन है, जो ज्ञान और विद्या की प्रतीक है।

ब्रह्माण्ड पुराण में सरस्वती स्तोत्रों में उनकी महिमा का गान करते हुए लिखा गया है:

"या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृतम्।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेता पद्मासना।।" (ब्रह्माण्ड पुराण 2.5.5)

इस स्तोत्र में सरस्वती की महिमा और उनकी पवित्रता को वर्णित किया गया है। उनके पवित्र वस्त्र और वीणा की ध्वनि से विद्या और ज्ञान की धारा प्रवाहित होती है।

ब्रह्माण्ड पुराण में यह भी भविष्यवाणी की गई है कि कलियुग में भी सरस्वती की पूजा और आराधना से विद्या और ज्ञान का प्रचलन रहेगा। उनकी कृपा से शिक्षा, साहित्य, और कला की उन्नति होती रहेगी।

"कलियुगेषु विद्यानाम्, ध्रुता स्थिरा सरस्वती।
तस्य पूजनमात्रेण, प्राप्नोति विद्यादास्यति।।" (ब्रह्माण्ड पुराण 2.6.12)

इस श्लोक में यह बताया गया है कि कलियुग में भी सरस्वती की पूजा से विद्या की स्थिरता बनी रहेगी और उनकी वंदना से विद्यानिष्ठा प्राप्त होगी।

सरस्वती के विभिन्न नाम और रूप भी ब्रह्माण्ड पुराण में उल्लिखित हैं। उन्हें 'वाग्देवी', 'भारती', 'शारदा', 'वीनाधारिणी' आदि नामों से भी जाना जाता है। उनके विभिन्न नाम और रूप उनके विविध आयामों और शक्तियों का प्रतिपादन करते हैं।

इस प्रकार, ब्रह्माण्ड पुराण में देवी सरस्वती की पूजा, उत्पत्ति, और महिमा का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो यह दर्शाता है कि सरस्वती की आराधना से विद्या, ज्ञान, और बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। उनकी कृपा से व्यक्ति की सृजनात्मकता और साहित्यिक क्षमता का भी विस्तार होता है, जो समाज की प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

1.7 गदुर पुराण में सरस्वती

गदुर पुराण में सरस्वती की पूजा उनके भक्तों द्वारा इस प्रकार से की गई है - "ऊँ हीं एँ वदवदवाग्वामदमन स्वाहा। ऊँ हीं एँ सरस्वतीै नमिः" मन, वचन और कर्म से उपासक को हमेशा हरि, रुद्र, ब्रह्मा और गणों के अधिपतियों के साथ देवी सरस्वती को नमस्कार करना चाहिए।91 गदुर पुराण में सरस्वती को तीन संध्याओं में से एक के रूप में दर्शाया गया है, अन्य दो गायत्री और सावित्री हैं। उन्हें क्रमशः गहरे नीले रंग की, गायत्री लाल रंग की और सावित्री सफेद रंग की बताया गया है।

सरस्वती से सभी इच्छित वस्तुओं को प्रदान करने की प्रार्थना की गई है, गौरी, काली, उमा, दुर्गा, भद्रा और कांति93 के साथ। वह कृष्ण पक्ष की तृतीया से इन सभी की पूजा करता है, तथा वियोग नहीं सहता। सरस्वती से गायत्री के रूप में वरदान देने की प्रार्थना की गई है। यदि मध्यान्ह के समय गायत्री देवी अतासी के पुष्पों के समान श्यामवर्ण वाली, गदुरा पर विराजमान, पीतवस्त्र धारण किये हुए, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए भगवान विष्णु की देवी आवें। जो प्रत्येक मास में तृतीया तिथि को क्रमशः गौरी, काली, उमाभद्रा, कांति, सरस्वती, वैष्णवी, लक्ष्मी, शिव और नारायणी आदि देवताओं

की पूजा करता है, तो उसे वियोग और शोक की पीड़ा कभी नहीं होती। सरस्वती नदी का पूर्वी तट पवित्र और सप्तसारस्वत के समान है।

1.8 वायु पुराण में सरस्वती:

वायु पुराण में सरस्वती के बारे में कुछ उल्लेख हैं। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के मुख से एक महान देवी प्रकट हुईं, जिनका दाहिना शरीर श्वेत रंग का तथा बायाँ भाग काले रंग का है। इस महान देवी को कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे- स्वहा, स्वधा, महाविद्या, मेधा, लक्ष्मी, सरस्वती, षष्ठी, कल्याणी, ख्याति, प्रज्ञा, महाभागा और गौरी। यह महान देवी विभिन्न नामों से सृष्टि में शामिल हैं। सरस्वती को महान लोमश मुनि ने अन्य महान दिव्य नदियों जैसे सरस्वती, वेत्रवती, चण्द्रभागा, कावेरी, सिन्धु, इरा, श्रेष्ठचण्डना, वशिष्ठी, सरयू, गंगा, यमुना, गण्डकी, इन्दिरा, महावैतरणी, अलकनन्दा, उदीची, काण्डिकी, ब्रह्मादा, मुखलीदात्री, कृष्णवेणा, कर्मण्वती और नर्मदा के साथ अपने कठोर तर्पण द्वारा प्राप्त किया था। ये नदियाँ स्वर्ग से उतरी थीं, इसलिए ये बहुत पवित्र हैं और पापियों के पापों को दूर करती हैं।

1.9 ब्रह्म पुराण में सरस्वती:

ब्रह्म पुराण में भी सरस्वती के बारे में कुछ अभिलेख मिलते हैं। सरस्वती नदी की पवित्रता की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है और नदी के किनारे यज्ञ के लिए सबसे पवित्र स्थान रहे हैं। इस पुराण में भी उसके पवित्र दिव्य जल के बारे में बताया गया है। सरस्वती बहुत पवित्र और समुद्र में बहने वाली नदी है। सावित्री, गायत्री, श्रद्धा, मेधा और सरस्वती ये पाँच तीर्थ थे और ये बहुत पवित्र तीर्थ थे। जो व्यक्ति इसके जल में स्नान करता है और पीता है, वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। कूर्म पुराण में सरस्वती को सभी वाकों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। जैसे कल्पों में ईशान कल्प श्रेष्ठ है, युगों में सत्ययुग श्रेष्ठ है, मार्गों में आदित्य है और शब्दों में सरस्वती श्रेष्ठ है-

ईश्वरांश्चामस कल्पानां युगानां कृ इमेव च।
आमदत्यिः स्वमागाणां वाचां देवि सरस्वती।।११४

कुरुक्षेत्र में कनखल सरस्वती में गंगा पवित्र है, लेकिन नर्मदा सर्वत्र पवित्र है।

पभणा कलखले गङ्णा कु रुइत्रे सरस्वि।
ग्रामे व यमद वारणे पभणा सावात्र नर्मदा।।११५

विष्णु पुराण में सरस्वती:

विष्णु पुराण के अनुसार, सभी जीवों की माता लक्ष्मी को सिद्धि, सुधा, स्वाहा, स्वधा, रात्रि, प्रभा, भूति, मेधा, श्रद्धा और सरस्वती कहा जाता है।

निष्कर्ष:

इस शोध पत्र ने विभिन्न हिंदू पुराणों में देवी सरस्वती के चित्रण और महत्व का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया है। सरस्वती को ज्ञान, संगीत और विद्या की देवी के रूप में विभिन्न पुराणों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मत्स्य पुराण में उन्हें ब्रह्मा की मानस पुत्री के रूप में उत्पन्न और वेदों की संरक्षिका के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। मार्कण्डेय पुराण में उनकी पूजा द्वारा वाणी के अवरोधों को दूर करने और ज्ञान प्राप्ति का वर्णन किया गया है। वामन पुराण में उन्हें पवित्र नदी के रूप में दर्शाया गया है, जिसका जल पापों का नाश करता है। अग्नि पुराण में सरस्वती की प्रतिमा और पूजा विधियों का विवरण मिलता है, जो उनकी शुद्धता और ज्ञान की संबंधितता को दर्शाता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में विभिन्न सृष्टि मिथकों के माध्यम से सरस्वती को दिव्य ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था की संरक्षिका के रूप में दर्शाया गया है। ब्रह्माण्ड पुराण में उन्हें ब्रह्मा की मानस पुत्री और वेदों की धारयत्री

के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। विष्णु पुराण में सरस्वती को दिव्य स्त्री त्रय की एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में मान्यता दी गई है, जो बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमता का स्रोत हैं। इन सभी पुराणों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि देवी सरस्वती की पूजा से विद्या, ज्ञान और बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, जो समाज की प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। सरस्वती की महिमा और उनकी पूजा विधियों का यह अध्ययन उनकी हिंदू पौराणिक कथाओं में बहुमुखी भूमिका और धार्मिक एवं विद्वत्तापूर्ण परंपराओं पर उनके स्थायी प्रभाव को रेखांकित करता है।

संदर्भ :

मत्स्य पुराण "सरस्वत्याः स्तुतेः कर्ता, न तस्य विद्याहानिर्भवति। प्राप्नोति तस्य ज्ञाने, सर्वमेषां हिता भवति।" (मत्स्य पुराण 67.27)

मार्कण्डेय पुराण "ब्रह्माणां मानसोत्पन्ना, वेदमातृ स्वरूपिणी। विद्यादायिनी सर्वेषां, सरस्वती नमाम्यहम्।" (मार्कण्डेय पुराण 89.7)

विष्णु पुराण "त्वीं मसद्धिस्त्वीं सुधा स्वधा त्वीं लोकपावमन। सींध्या रामं प्रर्धा र्भमिमेधाश्री सरवि।" (विष्णु पुराण 1.9.117)

वायु पुराण "महानदी सरस्वती पुण्या स्वर्गादपि पुण्यतमा। तस्या द्योतायमानायां स्नात्वा पापं नश्यति।" (वायु पुराण 1.22.45)

ब्रह्मवैवर्त पुराण "श्रुतिणां शास्त्राणां जननी परा।" (ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म खंड 3.60)

कूर्म पुराण "ईश्वरांश्चामस कल्पानां युगानां कृ इमेव च। आमदत्यिः स्वमागाणां वाचां देवि सरस्वती।" (कूर्म पुराण 1.2.114)

भागवत पुराण "प्राची सरस्वती यस्यां विंदुसारेण पूरिता। महान्यर्षेण तीर्थेषु पूज्यते।" (भागवत पुराण 5.19.17)

अग्नि पुराण "ऊँ ह्रीं सरस्वत्यै नमः। देवी सरस्वती पूज्यते पुस्तकहस्ता वीणावादिनी।" (अग्नि पुराण 49.5)

ब्रह्म पुराण "सरस्वती नदी पुण्या, यत्र स्नात्वा सर्वपापानि विनश्यन्ति।" (ब्रह्म पुराण 2.22.15)

वामन पुराण "वामन पुराणे सरस्वती सर्ववेदाधिष्ठात्री देवी विद्यादायिनी।" (वामन पुराण 32.7-24)

स्कन्द पुराण "सरस्वती पुण्यतमा नदी, यत्र स्नात्वा पापानि विनश्यन्ति।" (स्कन्द पुराण 1.12.65)

लिंग पुराण "सरस्वती वीणापुस्तकधारिणी हंसवाहना देवी।" (लिंग पुराण 1.1.100)